International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 42-43

# अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति पर एक विमर्श

**विजय कुमार यादव**

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत ।

**सारांश**

इस शोध पत्र में अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति एवं उनके सामाजिक संरचना के बारे में बताने का प्रयास किया गया है । आदी जनजाति अरुणाचल प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है । किसी भी समाज की संवेदना उसके साहित्य में अभिव्यक्त होती है । इसीलिए सहित्य को समाज का दर्पण कहां जाता है । जनजातीय समाज में लोककथा, लोकगीत, त्योहार आदि का विशेष महत्व होता है । उनकी सामाजिक - सांस्कृतिक क्रियाकलाप इनहीं से सम्बन्धित होती है । हर जनजातीय समाज का अपना खान - पान एवं रहन - सहन होता है । उनका अपना जीने का तरीका होता है ।

**मूल शब्द:** आदी जनजाति, लिपि, केबांग, सामाजिक संरचना, कृषि, लोककथा, लोकगीत, त्योहार, संस्कृति ।

**प्रस्तावना**

भारत के पुर्वोत्तर सीमान्त पर अवस्थित एक अत्यन्त खूबसूरत राज्य हैं, अरुणाचल प्रदेश। यह एक पहाड़ी प्रदेश हैं जो प्रमुख रुप से हिमालय के गोद में बसा हुआ है। नदियों, निर्झरों, वनस्पतियों तथा पर्वतमालाओं आदि के रम्य वैविध्य से सूसम्पन्न यह राज्य जितनी अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए मनोमुग्धकारी है, उतना ही अपने मानवीय सौन्दर्य के लिए भी हैं। यँहा के निवासियों की शांत प्रकृति ह्रदय में उभड़ी देशानुराग की भावना इसके सुंदरता में स्वाभाविक चार- चाँद लगा देती हैं। अरुणाचल प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 83,743 वर्ग कि.मी. है। अरुणाचल प्रदेश की सीमा कई देशों को स्पर्श करती है जिनमे पूर्व में बर्मा, उत्तर में चीन तथा पश्चिम में भूटान । ईनकी सीमा भूटान से 160 कि.मी., चीन से 130 कि.मी. तथा म्यानमार से 550 कि.मी. लगती हैं। अरुणाचल प्रदेश पहले नोर्थ ईस्ट फ्रन्टियर्स ट्रेकट था। 20 फरवारी 1987 को अरुणाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

अरुणाचल प्रदेश में कुल 26 प्रमुख जनजातियाँ रहती हैं जिनमें आदी, गालों, न्यीशी, तागीन, मोम्पा, आपातानी, मिश्मी, खामती, नोकते, तांगसा, वांगचू, शेरदुकपेन इत्यादि प्रमुख हैं। इन सभी जनजातियों की अपनी - अपनी उपजनजातियाँ भी है। अरुणाचल प्रदेश में 100 से भी अधिक उपजनजातियाँ रहती हैं। अरुणाचली बोलियों की अपनी कोई लिपि नहीं है। इनमें से मात्र दो जनजातियाँ ऐसी है जिनकी अपनी एक अधूरी सी लिपि है। खामती जनजाति की हीनयानी बौद्ध लिपि तथा मोम्पा की महायानी बौद्ध लिपि है।

आदी जनजाति अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। इसकी कुल आबादी लगभग तीन लाख के आस – पास है। आदी जनजाति की अधिकांश आबादी ईस्ट सियांग, अपर सियांग, सियांग, वेस्ट सियांग, तथा लोवर दीबांग वैली जिले में बसी हुई हैं। आदी जनजाति की कई उपजनजातियाँ भी हैं जैसें- पादाम, मिन्योंग, मिलांग, पासी, पांगी, कारको, सिमोंग, बोकार, पाइलिबों इत्यादि।

आदी समाज एक जनजातीय समाज हैं। जनजातीय समाज में लोककथाओं, लोकगीतों एवं त्योहारों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आदी जनजाति के विभिन्न सामाजिक एंव सांस्कृतिक क्रियाकलाप किसी न किसी लोककथा से सम्बन्धित होता है तथा इस में निरन्तर आयोजित होने वाले सामाजिक त्योहारों के माध्यम से पल्लवित- पुष्पित होते रहते हैं। अन्य जनजातियों की भाँति आदी जनजाति के त्योहारों की भी एक लम्बी सूची है। इन उत्सवों एंव त्योहारों के माध्यम से आदी जनजाति की जीवन शैली अभिव्यक्त होती है। जनजातीय समाज के रोम- रोम में उत्सव एंव त्योहार दिखाई पड़ते हैं। इन उत्सवों एंव त्योहारों के आयोजन के पिछे भी अनेक कारण होते हैं। इन उत्सवों एंव त्योहारों को मनाने का मुख्य प्रयोजन है, अच्छी फसल के लिए, नव वर्ष के स्वागत के लिए, स्वस्थ शरीर एंव पशूओं के लिए।

आदी समाज की सामाजिक संरचना विस्तृत एंव व्यवस्थित है। आदी समाज हर प्रकार के जाति- धर्म, कुल- वंश, गोत्र, वर्ण आदि की सीमाओं से परे हैं। आदी समाज में आते ही ऊँच - नीच, जातिवाद, धर्म की सभी परिभाषाएँ दम तोड़ देती है। जनजातिय समाज में इस तरह की खुबसुरती को देखना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। आदी समाज किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष जाति के माध्यम से संचालित नहीं होती हैं। इनकें संचालन में प्रत्येक इकाई का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता हैं।

आदी समाज के व्यवस्थित संरचना के केन्द्र में 'केबांग' है। 'केबांग' आदी जनजाति का महत्वपूर्ण राजनितिक, न्यायिक एंव सामाजिक संगठन है। आदी समाज पूर्ण रुप से लोकतांत्रिक समाज हैं। जनजातिय समाज में लोकतंत्र के स्पष्ट एंव स्वच्छ रुप यदि किसी को देखना हो तो आदी समाज एंव उसके 'केबांग' में देखे जा सकते हैं। वस्तुतः आदी जनजाति की सामाजिक, न्यायिक, एंव राजनीतिक व्यवस्था को जनतांत्रिक रुप देने में तथा सुदृढ़ बनानें में 'केबांग' महत्वपूर्ण भुमिका निभाती हैं। यहाँ पर ध्यान देने की बात यह हैं कि 'केबांग' का कोइ स्थायी प्रतिनिधि मंडल नहीं होता हैं। इसी में 'केबांग' की खुबसुरती हैं। आदी समाज में 'केबांग' वह व्यवस्था हैं जो निष्पक्ष भाव से न्याय करती है। 'केबांग' केवल विवादों को ही सुलझाते है ऐसा नहीं हैं। 'केबांग' शब्द का प्रयोग बहुआयामी होता है। 'केबांग' का सम्बन्ध केवल राजनीतिक, सामाजिक और न्यायिक व्यवस्थाओं से ही है,

ऐसा नहीं अपितु इसका सम्बन्ध आदी समाज के विभिन्न क्रियाकलापों से भी है। श्री बानी दांगेन ने अपनी पुस्तक "द केबांग ए यूनीक इंदिजिनियस पोलितिकल इंसतितियूसन आफ द आदीस" में आदी समाज के 'केबांग' के महत्व को स्वीकारते हुए 'केबांग' की परिभाषा को इस प्रकार दी है- *"The kebang as we understand today is a body, which administers village affairs, manages and conducts day- to-day problems of the village. Regulates and formulates, laws and issues ordinances for the well being of the society. It may also mean meeting conferences and discussion generally. The local court proceeding is also called kebang. The institution itself is also kebang."*

आदी जनजाति का मुख्य केन्द्र कृषि हैं। इस कारण आदियों के आर्थीक जीवन के केन्द्र में भी कृषि ही है। आदी जनजाति के लिए कृषि ही जीवन जीने का मूलाधार है। आदी समाज के साथ कृषि का सम्बन्ध प्राचीन काल से ही रहा है। यही कारण हैं कि आदी समाज को अपने मेहनत और बहादुरी के लिए जाना जाता हैं। आदी जनजाति के लोग मुख्य रुप से झूम खेती करते हैं। ये लोग मुख्य रुप से चावल, मक्का, मड़वा इत्यादि उगातें हैं। इसके अलावा साग, सब्जी, फल, आदि भी घरेलू खपत के लिए उगातें हैं।

आज भी आदी समाज में त्योहारों एंव उत्सवों के अवसर पर कृषि से सम्बन्धित लोकगीत एंव लोककथाएँ गाएँ जाते है, जिसे गाँव के सभी लोग बड़े ध्यान से सुनते है। आज के इस आधुनिक युग में आदी जनजाती के अधिकतर युवावर्ग कृषि को छोड़कर नौकरी के पिछे भाग रहें है। आज शहरों में रहनें वाले कृषि करना पसंद नहीं करते परन्तु गाँव में रहने वाले आदी लोग कृषि करने को अपना गर्व समझते हैं। वे अपनी धरती माँ से अत्यधिक प्रेम करते है और कृषि को ही अपना सब कुछ समझते हैं। वे लोग शहरों में रहने के वजाय गाँव में रहना अधिक पसन्द करते है। गाँव की मिट्टी की खुशबू से वह अलग रहना पसन्द नहीं करतें हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**


1. मनोरम भूमि अरुणाचल, माता प्रसाद, प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाजार दिल्ली - 6, संस्करण - 1995
2. ए कॉमपेरेतिव स्ट्डी ऑफ बोन रिलिजन ऑफ एन्सिएन्ट तिब्बट विथ दोनी- पोलो फेथ ऑफ आदीस ऑफ अरुणाचल प्रदेश- बानी दांगेन, हिमालय पब्लिसर, नई दिल्ली, संस्करण- 2007
3. हिस्टरी ऑफ दि आदी ऑफ अरुणाचल प्रदेश – डॉ. एन लेगो, हिमालय पब्लिसर, नई दिल्ली
4. दा केबांग- ए यूनीक इंडिजिनियस पोलिटिकल इंस्टितियुसन ऑफ दा आदीस – बानी दांगेन, हिमालय पब्लिसर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2003
5. पारतिसीपेसन ऑफ आदी वोमेन ईन दा पंचायत राज ईंसतितूयसन, अजय कुमार यादव, एम.फिल. शोध प्रबंध, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, 2009